निष्कर्ष

विश्व इतिहास के कुछ विषयों पर इस पुस्तक ने आपका परिचय एक लंबी कालावधि से कराया जिसे प्राचीन, मध्य व आधुनिक युगों में बाँटा जा सकता है। मानव उद्‌भव और विकास के कुछ प्रमुख विषय इस पुस्तक के केंद्र बिंदु रहे हैं। अलग-अलग अनुभागों में निम्नलिखित, क्रमशः लघुतर कालखंडों की चर्चा की गई-

i. 60 लाख वर्ष पूर्व से 400 ई.पू.
ii. 400 ई.पू. – 1300 ई.
iii 800 – 1700 ई.
iv 1700 – 2000 ई.

इतिहासकार प्रायः प्राचीन, मध्यकालीन या आधुनिक युग के विशेषज्ञ होते हैं, किंतु सर्वत्र इतिहासकार के शिल्प की कुछ सामान्य विशेषताएँ और समस्याएँ होती हैं। हमने प्राचीन, मध्य और आधुनिक युगों के बीच के अंतरों को मद्धम करने का प्रयत्न किया है, ताकि इतिहास कैसे लिखा जाता है और उसकी विवेचना कैसे की जाती है, इसका एक समग्र बोध प्राप्त हो। इसका उद्देश्य आपको पूरे मानव इतिहास की सामान्य समझ देना भी है – वह इतिहास, जो हमारी आधुनिक जड़ों के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा गहरे जाता है।

इस पुस्तक से आपको अफ़्रीका, पश्चिम तथा मध्य एशिया, पूर्वी एशिया, ऑस्ट्रेलिया, उत्तर तथा दक्षिण अमरीका तथा युनाइटेड किंगडम सहित यूरोप के इतिहास की एक झलक मिली होगी। इसने आपको 'केस स्टडी' पद्धति से परिचित कराया होगा। इन स्थानों के विस्तृत इतिहास के वर्णन का बोझ आप पर लादने की बजाय कुछ परिघटनाओं के मुख्य उदाहरणों का अध्ययन हमें बेहतर लगा।

विश्व इतिहास कई तरह से लिखा जा सकता है। इनमें से एक शायद सबसे पुराना तरीका लोगों के बीच संपर्क पर ध्यान केंद्रित करना है ताकि संस्कृतियों तथा सभ्यताओं के परस्पर संबंधों पर बल दिया जा सके और विश्व ऐतिहासिक परिवर्तन के बहुआयामी पक्षों का अन्वेषण किया जा सके। एक अन्य तरीका सापेक्षतः स्वावलंबी किंतु विस्तृत होते आर्थिक विनिमय के क्षेत्रों की पहचान करना है, जो संस्कृति और सत्ता के कुछ रूपों को बनाए रखते हैं। राष्ट्रों और क्षेत्रों के

ऐतिहासिक अनुभवों में अंतर स्पष्ट कर उनकी विशिष्टताओं को उभारना तीसरी विधि है। आपको इन तीनों विधियों के संकेत इस पुस्तक में मिले होंगे। किंतु समाजों (तथा व्यक्तियों) में विभिन्नताओं के साथ-साथ उनमें समानताएँ भी परिलक्षित होती हैं। मानव समुदायों के बीच अंतर्संबंध और समानताएँ हमेशा से रही हैं। वैश्विक तथा स्थानीय ('रेत के कण में विश्व'), 'मुख्यधारा' तथा 'हाशिया', सामान्य तथा विशिष्ट के आपसी संबंधों के बारे में आपने इस पुस्तक से जो कुछ सीखा होगा, वह इतिहास के अध्ययन का एक आकर्षक पहलू है।

हमारा विवरण अफ़्रीका, एशिया तथा यूरोप में बिखरी बस्तियों से शुरू हुआ था। वहाँ से हम मेसोपोटामिया के शहरी जीवन की ओर बढ़े। आरंभिक साम्राज्य मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन, फ़ारस तथा भारत में शहरों के ही इर्द-गिर्द बने थे। इसके बाद इनसे अधिक विस्तृत यूनानी (मकदूनियाई), रोमन, अरब तथा (1200 से) मंगोल साम्राज्य बने। इन साम्राज्यों में व्यापार-प्रणालियाँ, प्रौद्योगिकी तथा शासन अक्सर अत्यधिक जटिल होते थे। ज़्यादातर वे एक लिखित भाषा के प्रभावी प्रयोग पर निर्भर थे।

दूसरे सहस्राब्दि के मध्य में (1400 ई. से) पश्चिमी यूरोप में प्रौद्योगिकीय और संगठनात्मक बदलावों के कारण मानव इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। ये सभ्यता के 'पुनर्जागरण' या 'पुनर्जन्म' से जुड़े थे। इनका शुरुआती असर उत्तरी इटली में हुआ, लेकिन जल्दी ही यह पूरे यूरोप में फैल गया। यह पुनर्जागरण उस क्षेत्र के नगरीय जीवन और भूमध्यसागर की मुस्लिम दुनिया तथा बाइज़ेंटाइन के साथ आदान-प्रदान का नतीजा था। समय के साथ सोलहवीं सदी में विचार तथा खोज अन्वेषकों तथा विजेताओं के साथ अमरीका (उत्तर और दक्षिण) पहुँच गए। इनमें से कुछ विचार बाद में जापान, भारत और दूसरी जगहों तक भी पहुँचे।

विश्व-व्यापार, राजनीति तथा संस्कृति में यूरोप का वर्चस्व अभी क़ायम नहीं हुआ था। यह अठारहवीं तथा उन्नीसवीं सदी की विशेषता बनी, जब ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई और शेष यूरोप में फैल गई। ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी ने अफ्रीका तथा एशिया के कुछ हिस्सों पर औपनिवेशिक सत्ता हासिल कर ली जो पुराने साम्राज्यों से अधिक शक्तिशाली थी। बीसवीं सदी के मध्य तक जिस प्रौद्योगिकी, आर्थिक जीवन और संस्कृति ने कभी यूरोपीय राष्ट्रों को शक्ति प्रदान की थी, वे अलग-अलग रूपों में शेष विश्व में फैल चुके थे और इन्होंने आधुनिक जीवन की नींव रखी।

आपने विभिन्न अध्यायों में उद्धृत अंशों को देखा होगा। इनमें कई ऐसे स्रोतों से लिए गए हैं, जिन्हें इतिहासकार 'प्राथमिक स्रोत' कहते हैं। विद्वान ऐसी ही सामग्रियों से अपने 'तथ्य' हासिल कर इतिहास रचते हैं। वे इनका आलोचनात्मक अध्ययन करते हैं और इन स्रोतों की अस्पष्टता पर विशेष ध्यान देते हैं। एक ही स्रोत का प्रयोग करनेवाले इतिहासकार भिन्न बल्कि विपरीत राय पेश कर सकते हैं। दूसरे मानव विज्ञानों की भांति इतिहास से भी अलग-अलग तरह की बातें कहलवाई जा सकती हैं। यह ऐतिहासिक तथ्यों और इतिहासकार के तर्कों के बीच जटिल संबंध की वजह से है।

विद्यालय के अंतिम वर्ष में आप भारतीय (या दक्षिण एशियाई) इतिहास में हड़प्पा युग से आधुनिक भारत के संविधान बनने तक के इतिहास के कुछ पहलुओं का अध्ययन करेंगे। एक

बार फिर राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के विवेकपूर्ण मिश्रण पर बल होगा जो आपको केस-स्टडी पद्धति से कुछ चुने हुए विषयों का अध्ययन करने के लिए आमंत्रित करेगा। हमें उम्मीद है कि ये पुस्तकें आपको कई प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने में मदद करेंगी। इनमें से प्रमुख है, 'इतिहास पढ़ने की ज़रूरत क्या है?' क्या आपको पता है कि प्रतिभाशाली मध्ययुग विशेषज्ञ मार्क ब्लॉक ने दूसरे विश्वयुद्ध में खाई में रहते हुए लिखी गई अपनी पुस्तक द *हिस्टोरियन्स क्राफ्ट* की शुरुआत एक छोटे बच्चे के प्रश्न से की थी, 'डैडी, मुझे बताइए, इतिहास का फ़ायदा क्या है?'